

बर्ड फ्लू वायरस शोध पर वैज्ञानिकों की स्वैच्छिक रोक

दुनिया भर के 39 वैज्ञानिकों ने एक वक्तव्य जारी करके घोषित किया कि है कि वे अगले दो महीनों तक बर्ड फ्लू वायरस पर कोई अनुसंधान नहीं करेंगे। यह वक्तव्य बर्ड फ्लू सम्बंधी अनुसंधान को लेकर उठे विवाद के संदर्भ में आया है। पिछले दिनों खबर आई थी कि कुछ प्रयोगशालाओं में बर्ड फ्लू वायरस की नवीन उत्परिवर्तित किस्में तैयार की गई हैं जो इन्सानों को संक्रमित कर सकती हैं। इसे लेकर काफी बवाल मचा था कि इन वायरसों का दुरुपयोग हो सकता है। वक्तव्य में वैज्ञानिकों ने अनुसंधान सम्बंधी अपनी स्थिति स्पष्ट करते हुए कहा है कि अगले 60 दिनों के लिए रोक इस मकसद से लगाई गई है कि इस मामले पर अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर विचार-विमर्श हो सके और कोई आम सहमति बन सके। वैज्ञानिकों का उक्त वक्तव्य 20 जनवरी 2012 को जारी किया गया था। वह यहां प्रस्तुत है। (स्रोत फीचर्स)

इंफ्लुएंजा की वैश्विक महामारी का खतरा जन स्वास्थ्य के लिए एक बड़ी चुनौती है। यह जानी-मानी बात है कि इंफ्लुएंजा महामारियां ऐसे वायरसों से फैलती हैं जो पक्षी और सूअर जैसे जंतुओं में विकसित हुए हैं। ये वायरस ऐसे जिनेटिक परिवर्तन हासिल कर सकते हैं जो इन्सानों को संक्रमित करने की उनकी क्षमता बढ़ा देते हैं। इंफ्लुएंजा महामारियों से निपटने के लिए दुनिया भर में तैयारी की योजनाएं क्रियान्वित की गई हैं। इंफ्लुएंजा महामारी की रोकथाम के काम में एक प्रमुख बाधा यह है कि हम नहीं जानते कि वह क्या चीज़ है जो इन वायरसों में इन्सानों को संक्रमित करने की क्षमता पैदा कर देती है। नतीजतन, जंतुओं में पाए जाने वाले इन वायरसों की महामारी उत्पन्न करने की क्षमता का आकलन करना काफी मुश्किल हो जाता है।

हाल के शोध के दौरान एच5एन1 वायरसों द्वारा फेरेट्स (एक स्तनधारी जीव) में प्रसार के कुछ निर्धारक लक्षणों की पहचान हो पाई है। इंफ्लुएंजा वायरस के प्रसार सम्बंधी ज़िम्मेदारीपूर्ण शोध कार्य में कई प्रयोगशालाएं शामिल हैं और यह काम कई मॉडल जंतुओं के साथ किया जाता है। इस शोध कार्य में जैव सुरक्षा के सर्वोत्तम अंतर्राष्ट्रीय मानकों का पालन किया जाता है। इन मानकों का नियमन व निगरानी सम्बंधित अधिकारियों द्वारा सख्ती से की जाती है। यह वक्तव्य इन प्रयोगशालाओं के मुख्य शोधकर्ताओं द्वारा प्रस्तुत किया जा रहा है।

विस्कॉन्सिन विश्वविद्यालय, मेडिसन और एरेस्मस एमसी,

रॉटरडम, नेदरलैण्ड्स की दो प्रमुख इंफ्लुएंजा प्रयोगशालाओं में किए गए स्वतंत्र अध्ययनों से साबित हुआ है कि अत्यंत रोगजनक एच5एन1 पक्षी वायरस के हीमग्लूटिनिन (एचए) प्रोटीन से युक्त वायरस फेरेट्स में संक्रमण पैदा कर पाते हैं। इस महत्वपूर्ण जानकारी ने इंफ्लुएंजा के प्रसार के बारे में हमारी समझ को आगे बढ़ाया है। अलबत्ता, अभी इस बाबत और अनुसंधान की ज़रूरत है कि प्रकृति में इंफ्लुएंजा वायरस इन्सानों में महामारी पैदा करने की क्षमता कैसे हासिल करता है ताकि उन्हें इन्सान से इन्सान में प्रसारित होने की यह क्षमता हासिल करने से पहले ही रोका जा सके या ऐसे उपाय विकसित किए जा सकें कि यह क्षमता हासिल होने के बाद उन्हें रोका जा सके।

इन अध्ययनों से जन स्वास्थ्य के लिहाज़ से जो सकारात्मक लाभ मिलने की उम्मीद है, उसके बावजूद यह डर व्याप्त है कि फेरेट्स में संक्रमण योग्य एच5एचए वायरस प्रयोगशालाओं से बाहर निकल जाएगा। इस डर ने प्रचार माध्यमों में इस तरह के अनुसंधान के लाभ-हानि को लेकर तीखी बहस को जन्म दिया है। हम लोगों को यह आश्वस्त करना चाहते हैं कि उक्त प्रयोग उपयुक्त नियामक निगरानी के तहत और सुरक्षित अवरोधक सुविधाओं में सुप्रशिक्षित व ज़िम्मेदार कर्मियों द्वारा किए गए हैं ताकि दुर्घटनावश इन वायरसों को बाहर निकलने से रोका जा सके। इस बात की जांच संभव नहीं है कि क्या फेरेट-अनुकूलित वायरस इन्सान से इन्सान में संक्रमण पैदा कर सकता है। हम मानते हैं कि हमें और पूरे वैज्ञानिक समुदाय को इस महत्वपूर्ण अनुसंधान के लाभ

स्पष्ट रूप से बताने चाहिए और यह भी बताना चाहिए कि संभावित जोखिमों को कम करने के क्या उपाय किए गए हैं। यह काम हम एक अंतर्राष्ट्रीय मंच पर करने का इरादा रखते हैं, जहां वैज्ञानिक समुदाय साथ आकर इन मुद्दों पर विचार-विमर्श करेगा। हम यह समझ पाए हैं कि दुनिया भर की सरकारों और संगठनों को हमारे शोध कार्य से उभरने वाले अवसरों और चुनौतियों के सर्वोत्तम समाधान खोजने के लिए समय की ज़रूरत होगी। इन चर्चाओं के लिए समय

देने के लिए हम अत्यंत रोगजनक पक्षी इन्फ्लुएंज़ा वायरस एच5एन1 पर वह शोध स्वैच्छिक रूप से 60 दिनों के लिए रोक रहे हैं, जिसमें ऐसे वायरस बनाए जाएंगे जो स्तनधारियों में प्रसारित होने की ज़्यादा क्षमता रखते हैं। इसके अलावा जीवित एच5एन1 तथा फेरेट्स में संक्रमण योग्य वायरस एच5एचए वायरस पर शोध भी इस अवधि में नहीं किया जाएगा। हम प्रकृति में पाए जाने वाले एच5एन1 वायरस की संक्रामक क्षमता का पता लगाने सम्बंधी शोध जारी रखेंगे।